हिंदी विभाग

हिंदी विभाग

सत्यनिष्ठा होना मानवीय गुण है

सत्यनिष्ठा सबसे बड़ा तप है। इसका पुण्य प्राप्त करने के लिए मानव को केवल यही प्रयत्न करना पड़ता है कि जिस वस्तु को जिस में पढ़े देखे या सुने उसे उसी वास्तविक रूप में प्रकट कर दे। इस छोटे से प्रयत्न का ही नाम सत्यनिष्ठा है, इसके विपरीत सब कार्य असत्य भाषण के अन्तर्गत आ जाते हैं, इनसे आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचती है, सत्यवादी का आचरण सदैव शुद्ध रहता है। उसके अन्तः करण के पाप इस गुण से सदैव के लिए पुण्य का रूप धारण कर लेते हैं। उसका मन-रूपी चन्द्र निष्कलंका हो जाता है। उसका कालिमायुक्त हृदय गंगाजल के समान उच्चवल और पवित्र हो जाता है, सत्यवादी वीर और निडर होता है, वह कठिन मुसीबत में भी विचलित नहीं होता, राजा हरिश्चन्द्र ने अपना राज्य त्यागा, उनके कष्ट सहन किया पत्नी को बेचा, डोम के दास बना परंतु सत्य नहीं छोड़ा, अन्त में उन्हीं की विजय हुई और उसका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा गया, सत्यवादी की चिन्तन शक्ति दृढ़ होती है, उसके चरित्र का निर्माण हो जाता है विश्व में विश्वास होता है, उसके प्रियजन प्राण न्योछावर करने के लिए हर समय तत्पर रहते हैं, वह देव तुल्य पूजा जाता है, उसके त्याग और तपस्या पूर्ण जीवन से भगवान भी प्रसन्न रहते हैं।

असत्यवादी का विश्व में सम्मान नहीं होता, उसकी मे आत्मा का हनन हो जाता है, उसकी उन्नति का मार्ग सदा के लिए बन्द हो जाता है, उसकी शक्ति दिन प्रति दिन क्षीण होती जाती है, वह आत्म-सम्मान से हाथ धो बैठता है, लोग उसकी छाया तक से घृणा करने लगते हैं, सत्यनिष्ठा का अभ्यास जीवन की प्रारम्भिक घड़ियों से ही करना चाहिए, इसी के द्वारा सच्चा सुख

आत्मिक शान्ति, श्रद्धा - भजन, आत्मा - सम्मान और सामाजिक उन्नति पा सकते है. सत्य की सदा जय और असत्यकी पराजय की पराजय होती है, जैसे मानव - हृदय की मधुरता भावना है, यही वस्तु है जो जीवन को सच्चाई दिखाते है, और इसी सच्चाई के साथ हमें चलना चाहिए, जैसे सभ्यता बड़ो का मान छोटो को आदर दिखानेवालया ये भी एक सच्चाई है.

अगर मनुष्य संसार में सच्चाई और सही के मार्ग को अपनाता है तो इससे केवल व्यक्तिगत जीवन में लाभ ही नही मिलता बल्कि प्रेम और सत्य की भावनाएँ उसके जाग्रत होती है. मनुष्य को ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि विश्व की नयी पीढ़ी एक दूसरे के प्रति जहरीली भावनाएँ न पाले, घृणा और हिंसा के बिच्छु हमारे प्राणो में डंक न मारे. बल्कि मानव का मानक के प्रति सत्यनिष्ठा बना रहे. प्राचीन युग में सदा मनुष्य सत्य से ही चलते थे, इसलिए मनुष्य को अहंकार और स्वार्थ की भावना के त्याग देना चाहिए. प्राय: देखा गया है कि बहुत से लोग अपने स्वार्थ के लिए झुठ बोलते है, चोरी करते है और धोखा आदि देते है, इतना ही नही समय पड़ने पर वे अपनी आत्म और सम्मान को कौड़ियों के बदले दे डालते है. अत: प्रत्येक व्यक्ति को आत्मा - सम्मान से परिपूर्ण होना चाहिए.

— पुजा शर्मा

घड़ी : सिर्फ समय से अधिक

हम ध्यान से देखते हैं कि एक घड़ी उन चीजों में से एक है जिसकी हमें वास्तव में आवश्यकता है, अगर दीवारे पर लटकता है, तो मेज पर बैठता है, हमारे फोन पर चमकता है, और चुपचाप हमारे जीवन के पूरे ढांचे को बंद कर देता है, लेकिन अगर आप एक सेकंड के लिए सोचते हैं, तो एक घड़ी सिर्फ एक उपकरण नहीं है- यह मूल रूप से मानवता का कुछ ऐसा नियंत्रित करने की कोशिश करने का तरीका है जो कभी नहीं रुकता है, उन दिनों, लोगों की कलाई पर आकर्षक डिजिटल डिस्प्ले या स्मार्टवॉच नहीं होती है, वे सूर्य, छाया और अंतत : धूपघड़ी जैसे आविष्कारों पर निर्भर थे, और पानी की घड़ियां, फिर यांत्रिक घड़िया आई, फिर वे जटिल थीं, गियर बैडिलम के साथ मास्टर पीस टिक करती थीं, वे केवल कार्यात्मक नहीं थे, एक समय में बनाए रखने का संतुलन स्थिति थी और अब वास्तव में आपकी जेब में शायद तब तक नजर अंदाज कर दिया जाता है जब तक कि आपको देन न हो, और ए

घड़ियां केवल समय को नहीं

नापती है, बल्कि वे हमारे जीवन को आकार देती है, इसके बारे में सोचें, स्कूल की अवधि, कार्यालय के घंटे, ट्रेन का समय, समय सीमा यह सब घड़ी के समय पर चलता है, दर्शों के बिना, में कुछ समाज शोत चाल होगा, घड़ियों के बारे में कुछ काल्पनिक भी है, वे चलते रहते हैं, चाहें आप अपने जीवन का सबसे अच्छा दिन बिता रहें हों या एक नट में फंस गए हों, घड़ी की टिक टिक यह बताती है कि समय किसी के लिए नहीं रुकता है, आप जो भी सेकंड बर्बाद करते हैं वह चला जाता है, दिन के अंत में, एक उपकरण, एक प्रतीक है, अगर हमें याद दिलाया जाए कि हम समय को नियंत्रित नहीं कर सकते हैं, तो हम समझ सकते हैं कि हम इसके साथ क्या करते हैं,

— प्रियांशु डे
चौथी कक्षा

बूढ़े आदमी ने उदास होकर कहा, "हाँ बेटा, मेरा बटुआ खो गया है, उसमें मेरे सारे पैसे थे, अब समझ नहीं आ रहा क्या करूं।" रवि मुस्कुराया और बोला, "क्या यह आपका है?" और बटुआ उसकी ओर बढ़ा दिया। बूढ़े आदमी का चेहरा खुशी से खिल उठा। "हाँ! यही है मेरा बटुआ!" उसने राहत की साँस ली। उसने पैसे गिनकर देखे - सब ठीक थे, वह बोला, "बेटा, तुम बहुत अच्छे हो, यह लो, कुछ पैसे इनाम के तौर पर रख लो।" लेकिन रवि ने मना कर दिया, "नहीं, मुझे इनाम नहीं चाहिए, मैंने तो बस काम किया है।" बूढ़ा आदमी बहुत खुश हुआ, उसने रवि को आशीर्वाद दिया। जब रवि घर पहुँचा और अपनी माँ को सब बताया, तो उसकी माँ ने उसे प्यार से गले लगा लिया, "मुझे तुम पर बहुत गर्व है," उसने कहा, उस दिन रवि को समझ आया कि सच्ची खुशी पैसे से नहीं; बल्कि अच्छे काम करने से मिलती है।

सीख: "ईमानदारी ही असली ताकत है।"

— प्रियांशु डे
चौथी कक्षा

देश

ग्राम, नगर या कुछ लोगों का काम नहीं होता है देश
संसद, सड़कों, आयोगों का नाम ही होता है देश
देश नहीं होता है केवल सीमाओं से घिरा मकान
देश नहीं होता है कोई सजी हुई ऊँची दुकान
देश नहीं क्लब जिसमें बैठ करते रहें सदा हम मौज
देश नहीं केवल बंदूकें, देश नहीं होता है फौज
जहाँ प्रेम के दीपक जलते वही हुआ करता है देश

जहाँ इरादे नहीं बदलते वही हुआ करता है देश
सज्जन सीना ताने चलते वही हुआ करता है देश
हर दिल में अरमान मचलते वही हुआ करता है देश
वही होता जो सचमुच आगे बढ़ता कदम-कदम
धर्म, जाति, भाषाएँ जिसका ऊँचा रखती है परचम
पहले हम खुद को पहचानें फिर पहचानें अपना देश
एक दमकता सच्चा बनेगा, नहीं रहेगा सपना देश

— सोहैल कुरैशी
द्वितीय कमाही

संघर्ष

कोई अपनी दो वक्त की रोटी के लिए
तो कोई अपनी छत के लिए
कोई अपने मन में आ रहे बुरे विचारों से
तो कोई मन में बसे डर से
सभी संघर्ष कर रहे हैं

कोई समाज की बुरी सोच के खिलाफ तो
कोई अपने लक्ष्य को पाने की चाह में
कोई गिरते उठते दो कदम चलने में
तो कोई कल कैसे गुजारा करेंगे इस विचार से
सभी संघर्ष कर रहे हैं

कोई दो पैसे जोड़ने में
तो कोई हमें अच्छा भोजन खिलाने में
कोई फिर से मुस्कुराने में
तो कोई अपने दर्द को छिपाने में
सभी संघर्ष कर रहे हैं

— पूजा शर्मा
छली छमाही